

ओशो इंटरनेशनल मैडिटेशन रिजॉर्ट साक्षात्कार



साक्षात्कार

संगीत की रुचि मुझे बचपन से ही रही है। गायन से मैंने अपनी संगीत की यात्रा शुरू की। घर में एक बहुत पुराना सितार रखा हुआ था, एक दिन मैंने उसे बजाना शुरू किया, जब मैं बारह वर्ष की थी। तबसे मेरा सितार की तरफ रुझान बढ़ने लगा। मेरे पिताजी ने मुझे पूरा सहयोग किया। वह स्वयं भी बहुत अच्छे गायक कलाकार हैं, और थियेटर आर्टिस्ट भी हैं। घर में मुझे संगीत का माहौल मिला, जिससे कि मैं आगे बढ़ती हुई। संगीत वादन में एम. ए. किया जिसमें गोल्ड-मेडलिस्ट रही, यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली पाती हूँ कि मुझे हमेशा अच्छे गुरुजी से सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है और अभी भी संगीत की शिक्षा ले रही हूँ। संगीत और ध्यान यही मेरा जीवन है।

मेरा एक और सौभाग्य यह कि मैंने जिस घर में जन्म लिया उस घर में ओशो मिले। मेरे पिताजी ने 1979 में संन्यास लिया और मेरा जन्म 1980 में हुआ। मैंने अपने घर में बचपन से ही ध्यान का माहौल पाया। बचपन से ही मेरे माता-पिता के साथ शिविर में जाने लगी। ध्यान जैसे मुझे थाली में परोसा गया।

चारों तरफ ओशो की ऊर्जा में ही रही। पहली बार 2001 में ओशो इंटरनेशनल मैडिटेशन रिजॉर्ट में मेरा आना हुआ। जब मैंने मुख्य द्वार के भीतर प्रवेश पाया तो ऐसा लगा कि मैं अपने घर लौट आई और मेरे आंसू नहीं रुके। जब मैं चुआंगत्जु में गई तो वह मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत क्षण था जिसको बयान करना मुश्किल है। 2004 में मैंने संन्यास लिया। उसके बाद तो जीवन जैसे पूरा ही बदल गया। मैंने पाया मेरे संगीत में गहराई और बढ़ गई। मैं और ज्यादा संगीत में डूबने लगी।

मुझे यहां रिजॉर्ट में संध्या ध्यान सभा (ईवनिंग मीटिंग) में सितार बजाने का बार-बार मौका मिला। वेरायटी शो, प्लाजा, फेस्टीवल, जोरबा, मीरा, च्वांगत्जु हर जगह सितार बजाने का मौका मिला। सितार के कार्यक्रम में बाहर बहुत करती हूँ, लेकिन जो ओशो मैडिटेशन रिजॉर्ट में संन्यासियों के समक्ष बजाने का मौका मिलता है उसमें जो मैं डूबती हूँ--वह घटना और कहीं नहीं घटती है। केवल इसी ऊर्जा में घटती है। उसको बयान करना मुश्किल है। 2004 में मुझे ओशो रिजॉर्ट में रहने का मौका मिला।

मैं 'लिविंग इन प्रोग्राम वर्क एज मैडिटेशन' में सहभागी हुई और डिस्पेच विभाग में करीब एक वर्ष काम किया जो कि मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत समय था। उसमें मैंने सीखा कि कार्य को कैसे ध्यान बनाया जा सकता है। उसके बाद मेरे कार्य करने की गुणवत्ता बदल गई।

मुझे बहुत से ओशो मैडिटेटिव थैरेपीज़ करने का मौका मिला जैसे --ओशो मिस्टिक रोज़, ओशो नो माइन्ड, अवेयरनेस इंटेन्सिव: हू इज इन।

मुझे ऐसे लगा कि जैसे मेरा पूरा जीवन ही परिवर्तित हो गया। एक वर्ष बाद जब मैं वापस लौटी तो मैं, मेरे हर एक कार्य को ध्यान के रूप में लेने लगी। जिंदगी जैसे पूरी बदल गई। मैंने लगातार काफी वर्षों तक सक्रिय ध्यान किया और फिर विपस्सना। मैं ओशो की अलग-अलग बतायी गई विधियों को अपने में उतारने की कोशिश करती हूँ। इन ध्यान प्रयोगों ने जैसे पूरा जीवन ही बदल दिया हो। अभी मैं काफी वर्षों से ओशो नादब्रह्म और विपस्सना ध्यान नियम से करती हूँ। मैं ध्यान से ही अपने दिन की शुरुआत करती हूँ।

OSHO®

© 2013 ओशो इंटरनेशनल

कॉपीराइट & ट्रेडमार्क जानकारी